जामिया मिल्लिया इस्लामिया
जनसंपर्क एवं मीडिया समन्यवक कार्यालय

25-10-2020

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया ने 'संयुक्त राष्ट्र @ 75: शांति बनाए रखने की चुनौतियां' पर ऑनलाइन लेक्चर आयोजित किया

जामिया मिल्लिया इस्लामिया की एमएमएजे एकेडमी ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़ ने 23 अक्टूबर 2020 को "यूएन @ 75: शांति बनाए रखने की चुनौतियां" विषय पर एक ऑनलाइन लेक्चर का आयोजन किया। बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी में यूनेस्को के चेअर पर्सन, प्रो प्रियंकर उपाध्याय ने यह व्याख्यान दिया। प्रो उपाध्याय शांति अनुसंधान और शांति-निर्माण के क्षेत्र में अपने महत्वपूर्ण काम के लिए जाने जाते हैं। वह कई प्रसिद्ध पुस्तकों के लेखक हैं, जिनमें 'लॉन्ग वॉक ऑफ पीसः टुवॉड्ज़् ए कल्चर ऑफ प्रिवेंशन' शामिल है। यह व्याख्यान संयुक्त राष्ट्र संगठन (यूएनओ) की स्थापना की प्लेटिनम जुबली के मौके पर आयोजित किया गया था।

एमएमएजे एआईएस के कार्यकारी निदेशक प्रो अजय दर्शन बेहेरा ने अपनी प्रारंभिक टिप्पणी में स्पीकर का स्वागत किया और वैश्विक स्वास्थ्य संकट के दौर से गुज़र रही दुनिया के संदर्भ में, संयुक्त राष्ट्र की भूमिका के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि समय के साथ संयुक्त राष्ट्र का असर कम हो जाने के बावजूद, यह बहुपक्षवाद के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक बना हुआ है।

प्रो बेहरा ने संयुक्त राष्ट्र के बुनियादी सिद्धांतों को याद करते हुए कहा कि कैसे इसने अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के रखरखाव और देशों और लोगों के बीच शांति और सुरक्षा बनाए रखने तथा दुनिया भर में जीवन को बेहतर बनाने में कितनी अहम भूमिका निभाई है। यह हमेशा कामयाब नहीं हुआ है, लेकिन इसके बावजूद इसने सार्वजनिक क्षेत्र में सुरक्षा, स्थिरता, अधिकारों और विकास पर नए-नए विचारों का बहुमूल्य योगदान दिया है।

प्रो प्रियंकर उपाध्याय ने अपने व्याख्यान में उन हालात के बारे में विस्तार से बताया जिसमें संयुक्त राष्ट्र अस्तित्व में आया था। संयुक्त राष्ट्र से पहले के राष्ट्र संघ के कामकाज के अनुभवों ने यूएन को बनाने में उपयोगी सबक मुहैया कराए हैं। प्रो उपाध्याय के अनुसार, संयुक्त राष्ट्र के शुरूआती दौर में शांति का यूरोसेंट्रिक नज़रिया हावी थी। उस वक़्त इसकी मुख्य चिंता सामूहिक सुरक्षा और युद्धों की रोकथाम थी। शीत युद्ध के दौरान संयुक्त राष्ट्र ने महाशक्तियों के बीच मध्यस्थता करने में प्रमुख भूमिका निभाई और दुनिया के कई हिस्सों में हो रहे सशस्त्र संघर्षों को सुलझाने में योगदान किया। इसके लिए, संयुक्त राष्ट्र की देख रेख में बहु-राष्ट्रीय शांति सेना का गठन हुआ। इस तरीके से संयुक्त राष्ट्र ने शीत युद्ध के दौरान ही नहीं, बल्कि शीत युद्ध के बाद के वक़्त में भी शांति बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उन्होंने बताया कि कैसे द्विध्रुवीय विश्व व्यवस्था के पतन, संघर्षों और गृह युद्धों के बढ़ने पर, संयुक्त राष्ट्र ने नागरिक समाज को शामिल करते हुए समावेशी प्रक्रिया को अपना कर, शांति की धारणा को फिर से परिभाषित किया। इसमें यह सकरात्मक सोच उभरी कि संघर्ष की शुरुआत से पहले ही शांति का निर्माण शुरू हो जाना चाहिए। साथ ही शांति की गुणवत्ता इस बात में निहित है कि लोगों की गरिमा का हर कीमत पर सम्मान किया जाए।

प्रो उपाध्याय ने अपने लेक्चर में "शांति बनाए रखने" की अवधारणा को समझाया। इस धारणा ने, यूरोसेंत्रिक विचारों से शांति-निर्माण की प्रक्रिया को मुक्त कर दिया है। इसमें संस्कृति और शांति-निर्माण के बीच के रिश्तों को "शांति

बनाए रखने" में बहुत गंभीरता से लिया जाता है। यह इस तथ्य को स्वीकार करता है कि सभी धर्म और संस्कृतियां शांति बनाने और बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसके लिए, संस्कृतियों और धर्मों के बारे में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की जागरूकता और ज्ञान में और भी ज़्यादा सुधार करना चाहिए। इससे शांति-निर्माण की यूरोसेंत्रिक धारणाओं से स्पष्ट बदलाव आएगा। यह बदलाव निश्चित रूप से स्थानीय / स्वदेशी समुदायों को शांति प्रक्रियाओं को खुद अपने हाथों में लेने और शांति-निर्माण तंत्र के नए रूपों को विकसित करने में मदद करेग। अपने लेक्चर का समापन, प्रो उपाध्याय ने इस सकारात्मक टिप्पणी के साथ किया कि अपनी प्लैटिनम जयंती पर भी संयुक्त राष्ट्र अभी बहुत युवा है और भविष्य में इसे कई महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभानी हैं।

एमएमएजे एआईएस के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ शाहिद तसलीम ने इस अहम लेक्चर में हिस्सा लेने वाले सभी लोगों का शुक्रिया अदा किया।

अहमद अज़ीम
जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया समन्वयक